वियना कांग्रेस

→ उद्देश्य - क्रांतिकारी तत्वों का विनाश
- यूरोप में पुरातन व्यवस्था की पुनर्स्थापना

→ आरंभ - लाइपजिग युद्ध के बाद 1 नवम्बर 1814 को
- नेपोलियन के पुनः फ्रांस वापस जाने के बाद वाटरलू का युद्ध। इसके पश्चात 1815 में वियना कांग्रेस फिर से आरंभ हुआ।

→ कांग्रेस के सामने समस्याएँ -
(i) देशों की सीमाओं का पुनर्निर्धारण कैसे हो? (iv) भविष्य में यूरोप में शांति व्यवस्था कैसे
(ii) पुराने एवं नये राज्यों का शासक कौन होगा? कायम रखी जाय?
(iii) क्रांतिकारी विचारों के प्रसार को कैसे रोका जाय?

→ तुर्की को छोड़कर यूरोप के सभी छोटे बड़े राष्ट्रों ने इसमें प्रतिभाग किया।

→ 1648 के वेस्टफेलिया की संधि के बाद पहली बार यूरोपीय राष्ट्रों के पहली बार किसी विषय पर एक साथ बैठे थे।

→ प्रमुख प्रतिनिधि -
(1) लॉर्ड कैसलरे तथा वेलिंगटन का ड्यूक - इंगलैण्ड के प्रतिनिधि - दास व्यापार का अंत
(2) फ्रेडरिक विलियम तृतीय, मंत्री - हार्डेनबर्ग और हम बोल्ट - प्रशा
(3) तेलरां - फ्रांस का विदेश मंत्री
(4) अलेक्जेंडर प्रथम - रूसी जार
(5) मेटरनिक - आस्ट्रिया का चांसलर

→ रूस के पास यूरोप की सबसे बड़ी सेना थी तथा इसे नेपोलियन को पराजित करने का श्रेय था। इसे में रूसी जार का महत्व काफी बढ़ जाता है। यूरोप का पहली बार नेतृत्व रूस कर रहा था।

→ मेटरनिक - वह घोर प्रतिक्रियावादी तथा क्रांति विरोधी था। 1809 में आस्ट्रिया का चांसलर बना 1815 - 1848 तक यूरोप के राजनीति पर इसका जबर्दस्त प्रभाव रहा।

→ मेटरनिक राष्ट्रीयता के सिद्धांत का घोर विरोधी था। राष्ट्रीयता का अर्थ था कि इसके आधार पर लोगों का स्वतंत्र राज्य कायम करने का अधिकार प्राप्त हो जाएगा। यूरोप में राष्ट्रीयता के सिद्धांत के विकास का अर्थ था आस्ट्रियन साम्राज्य का विनाश क्योंकि आस्ट्रियाई साम्राज्य के अंतर्गत विभिन्न नस्ल, भाषा, संस्कृति आदि के लोग निवास कर रहे थे।

→ कांग्रेस के समक्ष समस्याओं के अतिरिक्त कुछ विचारणीय प्रश्न भी थे -
(i) नेपोलियन को परास्त करने वाले शासकों को पुरस्कृत करना
(ii) नेपोलियन के समर्थकों को दंडित करना
(iii) फ्रांस के पड़ोसी देशों को शक्तिशाली बनाया जाय ताकि भविष्य में ऐसी स्थिति से निपटा जा सके

→ कांग्रेस के सिद्धान्त - 1. शक्ति संतुलन का सिद्धान्त
2. वैध अधिकार का सिद्धान्त

प्रादेशिक व्यवस्था

1. फ्रांस - फ्रांस की भौगोलिक स्थिति वही स्वीकार की गई जो 1791 में थी। वहाँ पुनः बूर्बो वंश का शासन स्थापित कर दिया गया। उसके पड़ोस में शक्तिशाली राज्य स्थापित किया गया।

(2) हॉलैण्ड - बेल्जियम को हॉलैण्ड के साथ मिलाकर ऑरेंज वंश का शासन पुनर्स्थापित किया गया।

(3) सार्डिनिया - के साथ पिडमोण्ट, जिनोवा और सेवाय को मिला दिया गया। शेष क्षेत्र में पुरातन राजवंश की स्थापना की गई

(4) प्रशा - राइन नदी के तट पर प्रशा को मजबूत बनाया गया। पोमेरिया, उत्तरी सेक्सनी, पोसेनथार्न तथा डानिंग का प्रदेश प्रशा को मिला।

(5) रूस को वार्सोवा तथा फिनलैण्ड प्राप्त हुआ

(6) स्वीडन और डेनमार्क मिला दिया गया।

(7) आस्ट्रिया - लोम्बार्डी, वेनेशिया, इलिरिया के क्षेत्र जो इटली का हिस्सा था, पूर्वी गेलेशिया जो रूस का हिस्सा था तथा टाइरोल जो बवेरिया का प्रदेश था, ये सब आस्ट्रिया को मिला

(8) स्वीट्ज़रलैण्ड - की पुनर्स्थापना

(9) स्पेन तथा नेपल्स में पुरातन राजवंश की पुनर्स्थापना

(10) ग्रेट ब्रिटेन - माल्टा, सेन्ट लूसिया, टोबेगो और मॉरिशस के द्वीप फ्रांस से लेकर इंग्लैण्ड को दिया गया। हेलिगोलैण्ड से आयोनियन द्वीप, हॉलैण्ड से लंका द्वीप तथा अफ्रीका में आशा का अंतरीप इंग्लैण्ड को मिला।

(11) जर्मनी - जर्मनी पर प्रभाव के लिए आस्ट्रिया और प्रशा में संघर्ष मचा हुआ था। वैध अधिकार के सिद्धान्त के तहत पवित्र रोमन साम्राज्य की पुनर्स्थापना हो जाती। ऐसा प्रशा और आस्ट्रिया नहीं चाहते थे। अतः 39 राज्यों का एक ढीला ढाला संघ बनाया गया तथा इन राज्यों के प्रतिनिधियों का एक संघीय विधान सभा बनाकर आस्ट्रिया के सम्राट फ्रांसिस प्रथम को इसका अध्यक्ष बनाया गया।

अन्य कार्य - (1) दास प्रथा का अंत
(2) अंतर्राष्ट्रीय विधि - समुद्र के उपयोग, नदियों में आवागमन, राजदूत, राष्ट्रों में आपसी संबंध।
(3) यूरोपीय व्यवस्था (Concert of Europe) - शांति हेतु

हेजन - यूरोप के 19 वीं सदी का इतिहास वियना कांग्रेस के भूलों का सुधार है।
उपलब्धि - अगले 40 वर्षों तक यूरोप में शांति बनी रही।